एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

जीरो बजट प्राकृतिक कृषि: एक सस्ता और प्राकृतिक तरीका

(*कृष्णा जाट[1], अंकिता जाट[2], सरजेश कुमार मीना[3] एवं तेंदुल चौहान[4])
[1]राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान दुर्गापुरा, जयपुर (302018), राजस्थान
[2]कृषि महाविद्यालय, सुवाणा, भीलवाड़ा (311011), राजस्थान
[3]बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ (226025), उत्तर प्रदेश
[4]बागवानी एवं वानिकी महाविद्यालय, झालरापाटन (326023) झालावाड़, राजस्थान
*संवादी लेखक का ईमेल पता: jatkrishna950@gmail.com

जीरो बजट प्राकृतिक कृषि, जिसे 'जीबीएनएफ' के रूप में भी जाना जाता है, एक समृद्ध और प्राकृतिक तरीका है जिसमें किसान बिना किसी कीमती खाद और कीटनाशकों का प्रयोग किए बिना कृषि करते हैं। यह एक पर्यावरणीय और आर्थिक रूप से सुस्त तरीका है जिससे खेती करने के लिए कम लागत और प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किया जाता है।

इस तरीके का आविष्कार भारतीय किसान श्री सुब्बा रेड्डी द्वारा किया गया था और इसका मुख्य उद्देश्य खेती को प्राकृतिक और सुरक्षित बनाना है। इसके माध्यम से किसान बिना खर्च के अच्छी फसलें उत्पन्न कर सकते हैं और जैव विविधता को भी संरक्षित रख सकते हैं।

शून्य बजट प्राकृतिक खेती के चार स्तंभ

1. जीवामृत- ताजा गाय का गोबर और वृद्ध गोमूत्र (दोनों भारत की देशी गाय की नस्ल से), गुड़, दाल का आटा, पानी और मिट्टी को एक साथ मिलाकर खेतों में फैलाया जाता है।
2. बीजामृत-यह नीम के पत्तों और लुगदी, तंबाकू और हरी मिर्च से बना एक कीट और कीटनियंत्रण - बीजों के उपचार के लिए किया जा सकता है। मिश्रण है जिसका उपयोग
3. अच्छादान-यह जुताई के माध्यम से इसे नीचा दिखाने के बजाय कृषि के दौरान ऊपरी मिट्टी को संरक्षित करता है।
4. वापासा-यह उस स्थिति का वर्णन करता है जिसमें मिट्टी में हवा और पानी के अणु होते हैं। नतीजतन, पानी की आवश्यकताएं कम हो जाती हैं।

शून्य बजट प्राकृतिक खेती का महत्व

- राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (एनएसएसओ) के आंकड़ों के अनुसार, लगभग 70% कृषि परिवार अपनी कमाई से अधिक खर्च करते हैं, जिसमें आधे से अधिक किसान कर्ज में हैं।
- ZBNF जैसी प्राकृतिक खेती के तरीके, जो किसानों को उन इनपुट को खरीदने के लिए ऋण की आवश्यकता को कम करते हैं जो वे बर्दाश्त नहीं कर सकते, का मूल्यांकन केंद्र सरकार के 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने के लक्ष्य के हिस्से के रूप में किया जा रहा है।

- यह बीज, उर्वरक, कीटनाशकों और अन्य रसायनों जैसे बाहरी आदानों पर निर्भरता कम करके खेती की लागत को कम करता है, जो किसानों के बीच कर्ज और आत्महत्या का एक प्रमुख स्रोत है।
- इन आदानों पर पैसा बर्बाद किए बिना, किसान **शून्य बजट प्राकृतिक खेती (Zero Budget Natural Farming in Hindi)** का उपयोग कर सकता है। नतीजतन, उत्पादन लागत कम हो सकती है, और खेती "शून्य बजट" उद्यम बन सकती है।
- ZBNF विषाक्त पदार्थों के पर्यावरणीय और दीर्घकालिक प्रजनन प्रभावों के खिलाफ **लड़ाई** में फायदेमंद है।
- ZBNF अभियान का उद्देश्य रासायनिक कीटनाशकों के उपयोग को समाप्त करना और ध्वनि कृषि संबंधी प्रथाओं को बढ़ावा देना है। यह मृदा संरक्षण, बीज विविधता को बढ़ाता है और फसल की गुणवत्ता को बढ़ाता है।

जीरो बजट प्राकृतिक कृषि के मुख्य तत्व:

1. बीज चुनाव: किसान को अच्छे गुणवत्ता वाले बीज का चयन करना चाहिए। वह बीज स्थानीय प्रजातियों का प्राथमिकत: वनस्पतिगत विविधता को बढ़ावा देने के लिए अच्छा होता है।
2. मिट्टी की देखभाल: खेत की मिट्टी को स्वस्थ रखने के लिए खाद और जैव खाद का प्रयोग किया जाता है। यह सुरक्षित और प्राकृतिक तरीके से मिट्टी को पोषित करता है।
3. जल संचयन: बारिश के पानी को संचित करने के लिए जल संचयन संदर्भित किया जाता है। यह सुनिश्चित करता है कि पानी की कमी के समय भी खेत में पर्याप्त पानी उपलब्ध रहे।
4. कीट प्रबंधन: जीरो बजट प्राकृतिक कृषि में कीटनाशकों का प्रयोग नहीं किया जाता है। इसके बजाय, कीटों को प्राकृतिक तरीकों से नियंत्रित किया जाता है, जैसे कि गोबर, नीम की पत्तियाँ, और अन्य प्राकृतिक संवेदनशील साधनों का प्रयोग करके।
5. समुचित खेती: जीरो बजट प्राकृतिक कृषि में विभिन्न प्रकार की फसलें उगाने जाते हैं, जो खेत की जलवायु और मिट्टी के अनुसार समुचित होती हैं।

शून्य बजट प्राकृतिक खेती और किसानों की आय

- शून्य बजट प्राकृतिक खेती (Zero Budget Natural Farming in Hindi) की मुख्य विशेषता यह है कि उत्पादन की लागत शून्य है, और किसानों को आरंभ करने के लिए कोई इनपुट खरीदने की आवश्यकता नहीं है।
- पारंपरिक तरीकों की तुलना में, जीरो बजट नेचुरल फ़ार्मिंग में केवल 10% पानी की खपत होती है, जो पहले की विधि में होता था।
- यह किसानों को योजना से जल्दी धन प्राप्त करने की अनुमति देता है क्योंकि यह 30 एकड़ भूमि के लिए एक भारतीय स्थानीय नस्ल की गाय के उपयोग को बढ़ावा देता है।
- पालेकर ने दावा किया कि जीरो बजट खेती से रुपये का लाभ हो सकता है। सिंचित क्षेत्रों में 6 लाख प्रति एकड़ और 1.5 लाख रु. असिंचित क्षेत्रों में।
- शून्य बजट प्राकृतिक खेती सभी प्रकार की फसलों के लिए आदर्श है क्योंकि इसमें कृषि-जलवायु क्षेत्रों के सभी सम्राट शामिल हैं।
- किसान पहले वर्ष में अधिक उपज अर्जित कर सकते हैं, जो उनके लिए ही फायदेमंद है।
- जीरो बजट खेती करने वाले किसानों के कर्ज में डूबने की संभावना कम होती है क्योंकि उन्हें कृषि इनपुट खरीदने के लिए कर्ज लेने की जरूरत नहीं होती है।

- किसानों को प्रति एकड़ अधिक कमाई की भविष्यवाणी की जाती है, और गांवों से शहरों की ओर पलायन कम होने की उम्मीद है।

सरकार की पहल

- 2015-16 से, भारत सरकार ने परम्परागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाई) और राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आरकेवीवाई) जैसी विशिष्ट पहलों के माध्यम से जैविक खेती को बढ़ावा दिया है।
- विभिन्न जैविक खेती मॉडल जैसे कि प्राकृतिक खेती, ऋषि खेती, वैदिक खेती, गाय की खेती, **शून्य बजट प्राकृतिक खेती (Zero Budget Natural Farming in Hindi)** (ZBNF), और अन्य को 2018 के लिए संशोधित PKVY योजना नियमों में शामिल किया गया है। राज्यों को जैविक के किसी भी मॉडल को अपनाने की छूट है। किसान वरीयता के आधार पर ZBNF सहित खेती।
- बजट में, वित्त मंत्री ने कहा कि किसानों की उत्पादन लागत कम करने और उनकी आय को दोगुना करने के लिए शून्य बजट प्राकृतिक खेती (ZBNF) को बढ़ावा दिया जाएगा।

संक्षेप

जीरो बजट प्राकृतिक कृषि एक आदर्श प्रक्रिया है जो हमारे खेतों को स्वस्थ, सुरक्षित, और वृक्षित बनाने का संदेश देती है। इसका मुख्य उद्देश्य खेती को प्राकृतिक और आर्थिक रूप से सुस्त बनाना है, जिससे किसान बिना बड़े खर्चे के उच्च गुणवत्ता वाली फसलें उत्पन्न कर सकें।इस प्रक्रिया के माध्यम से, हम न केवल अपने खेतों को स्वस्थ बना रहे हैं, बल्कि हम अपने प्राकृतिक संसाधनों का सही तरीके से उपयोग करके पारिस्थितिकी तंत्र को भी संरक्षित कर रहे हैं। यह एक प्राकृतिक और आर्थिक दृष्टिकोण से सुस्त और संतुलित खेती की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है।

संदर्भ

1. Anonymous, (2016). Venkiah naidu congratulates farmer on winning Padma Shri. Indian Express.
2. Babu RY, (2008). Action Research Report on Subhash Palekar‟s “Zero Budget Natural Farming”.
3. GOAP, (2017). Status Note on Zero Budget Natural Farming (ZBNF) in A.P. (mimeo), personal communication.
4. Ramesh P, Rao AS, (2009). Organic farming: Status and Research achievements. Indian Institute of Soil Science Bhopal, 74.